

बहमनी सल्तनत

(1347 – 1527 ई.)

“दक्कन की स्वतंत्र पहचान”



उत्पत्ति, पृष्ठभूमि एवं स्थापना

- 14वीं शताब्दी के मध्य में मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल के दौरान दक्षिण भारत में व्यापक असंतोष फैला।
- तुगलक के दक्कन स्थित विदेशी अमीर (सादह अमीर / सद अमीर) केंद्र सरकार के अत्याचारों और नीतियों के विरुद्ध उठ खड़े हुए।



इस्माइल मुख
(नासिरुद्दीन शाह)

विद्रोहियों ने दौलताबाद में सबसे पहले इस्माइल मुख को अपना शासक चुना।

इस्माइल मुख वृद्ध थे, अतः उन्होंने स्वेच्छा से पद त्याग दिया।



हसन गंगू

इसके बाद योग्य सेनानायक हसन गंगू ने बागडोर संभाली।

संस्थापक

अबुल मुजफ्फर अलाउद्दीन बहमन शाह
(मूल नाम: हसन गंगू)

- राज्यारोहण: 3 अगस्त 1347 ई.
(24 रबी-उल-आखिर, 748 हिजरी)



राजधानी



प्रारंभिक राजधानी
गुलबर्गा
(अहसानाबाद)



1424 – 1425 ई.
अहमद शाह वली द्वारा
राजधानी को बीदर
(मोहम्मदाबाद)
स्थानांतरित किया गया।

राजकीय प्रतीक



राजध्वज पर
सुनहरे रंग का नौबत
(ढोल) और अर्धचंद्र।

साम्राज्य का विस्तार

(अलाउद्दीन बहमन शाह के समय)



प्रमुख शासक एवं राजनीतिक इतिहास

1 अलाउद्दीन बहमन शाह (1347 – 1358 ई.)



- अपने वंश का संबंध फारस के पौराणिक राजा बहमन (इस्फंदियार का पुत्र) से जोड़ा।
- नवस्थापित साम्राज्य की प्रशासनिक नींव रखी।
- इसे 4 प्रशासनिक प्रभागों (तरफों) में विभाजित किया:

1. गुलबर्गा
3. बरार

2. दौलताबाद
4. बीदर

2 मुहम्मद शाह प्रथम (1358 – 1375 ई.)



- प्रशासनिक संगठन का वास्तविक निर्माता।
- केंद्रीय परिषद और आठ प्रमुख मंत्रियों के पद सृजित किए।
- 1367 ई. में विजयनगर के विरुद्ध अडोनी के युद्ध में दक्कन के इतिहास में पहली बार तोपखाने और बारूद का संगठित प्रयोग किया गया।

- गुलबर्गा की प्रसिद्ध जामी मस्जिद (1367 ई.) का निर्माण कराया, जिसे ईरानी वास्तुकार रफी ने डिजाइन किया था। इसकी विशेषता यह है कि इसमें कोई खुला आंगन नहीं है; यह पूर्णतः ढकी हुई है।



गुलबर्गा की जामी मस्जिद
(1367 ई.)

3 ताजुद्दीन फिरोज़ शाह (1397 – 1422 ई.)



- बहमनी शासकों में सर्वाधिक विद्वान और बहुभाषाविद।
- अरबी, फारसी, तुर्की, तेलुगु, कन्नड़ और मराठी का ज्ञाता।
- भीमा नदी के तट पर फिरोज़ाबाद नगर की स्थापना की।
- खगोलशास्त्र में गहरी रुचि के कारण दौलताबाद के निकट एक वेधशाला (ऑब्जर्वेटरी) का निर्माण कार्य शुरू करवाया।
- विजयनगर शासक देवराय प्रथम के साथ 'सोनार की बेटी का युद्ध' (1406 ई.) लड़ा, जिसमें संधि के तहत देवराय प्रथम को अपनी पुत्री का विवाह फिरोज़ शाह से करना पड़ा तथा बांकापुर का क्षेत्र देहेज में देना पड़ा।



विवाह एवं संधि
= शांति की
राजनीति

बांकापुर

“बहमनी सल्तनत ने दक्कन में एक नई राजनीतिक, सांस्कृतिक और प्रशासनिक परंपरा की नींव रखी!”

“दक्कन की शक्ति,
भारतीय इतिहास का महत्वपूर्ण अध्याय”

अहमद शाह वली / सिहाबुद्दीन अहमद प्रथम

(1422 - 1436 ई.)



- सूफी संत हजरत गेसूदराज (बंदा नवाज) से निकट संबंध होने के कारण इसे जनसाधारण में 'वली' (संत) अथवा 'अहमद शाह अल-वली' कहा गया।

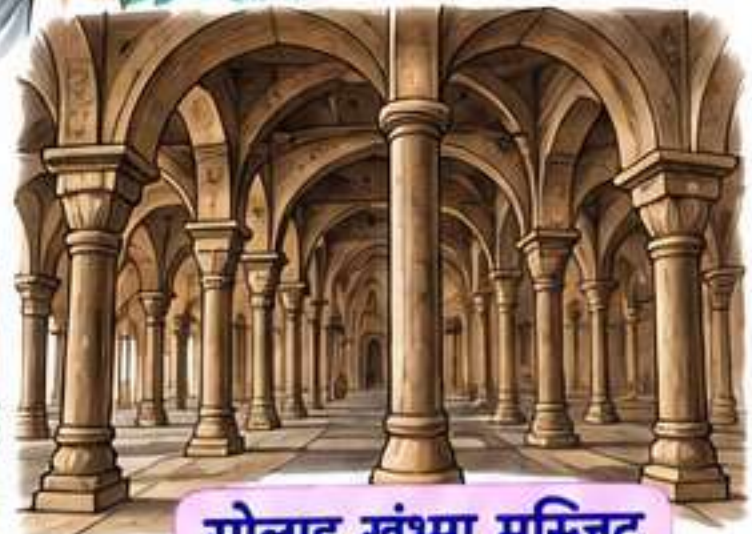
- राजधानी परिवर्तन (1424-25 ई.): गुलबर्गा से राजधानी बीदर स्थानांतरित की। बीदर का नाम बदलकर 'मोहम्मदाबाद' रखा गया।
- बीदर दुर्ग और उसके भीतर सोलाह खंभा मस्जिद का निर्माण कराया।



बीदर दुर्ग



हजरत गेसूदराज (बंदा नवाज)



सोलाह खंभा मस्जिद

हुमायूँ शाह

(1458 - 1461 ई.)



- अपनी अत्यधिक क्रूरता और कठोर दंड व्यवस्था के कारण इसे 'ज़ालिम' कहा गया।
- इसने महमूद गवां को 'मलिक-उत्तज्जार' की उपाधि देकर प्रधानमंत्री नियुक्त किया और अपनी मृत्यु के समय एक रीजेंसी परिषद (संरक्षक परिषद) बनाई, जिसमें गवां को प्रमुख स्थान दिया।



'ज़ालिम'

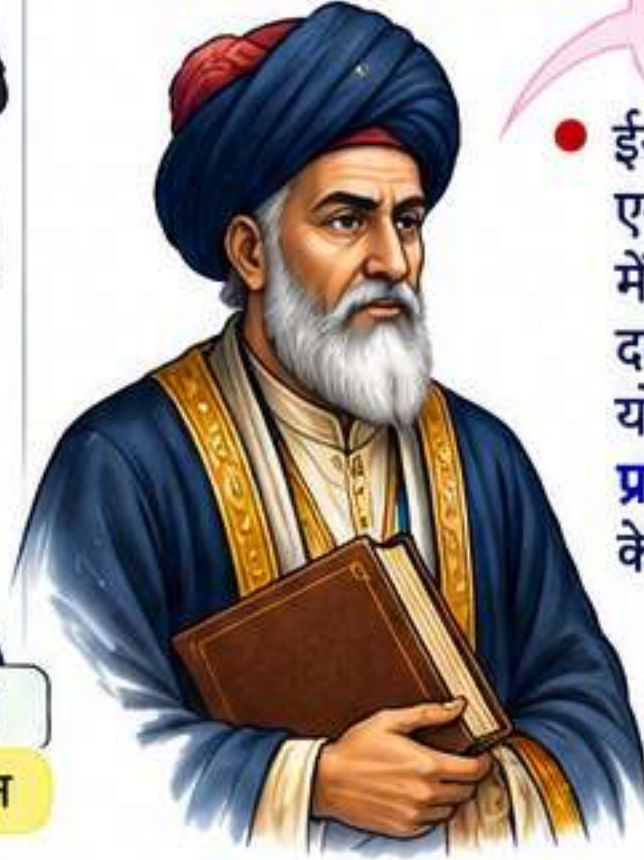
रीजेंसी परिषद (संरक्षक परिषद)



महमूद गवां प्रमुख स्थान

महमूद गवां

(1463 - 1481 ई.)



मूल नाम : ख्वाजा इमामुद्दीन महमूद

- ईरान के गिलान प्रांत का एक व्यापारी, जो 1453 ई. में व्यापार के उद्देश्य से दक्कन आया और अपनी योग्यता के बल पर प्रधानमंत्री (वजीर-ए-कुल) के पद तक पहुँचा।

प्रशासनिक एवं सैन्य सुधार

1 प्रशासनिक पुनर्गठन

पुरानी 4 प्रांतीय इकाईयों (तरफ) को विभाजित कर 8 प्रांतों में बदल दिया ताकि स्थानीय प्रांतपतियों (तरफदारों) की शक्ति सीमित रहे।



3 सैन्य वेतन सुधार

सैनिकों के वेतन में नकद वृद्धि की गई तथा मनसबदारों के लिए स्पष्ट नियम बने कि 500 घुड़सवारों की सेना के रखरखाव हेतु निश्चित जागीर दी जाएगी; नियम उल्लंघन पर वेतन कटौती का प्रावधान लागू हुआ।



500 घुड़सवार

निश्चित जागीर

2 किलेदारी व्यवस्था में परिवर्तन

पहले प्रांत के सभी दुर्ग तरफदार के अधीन होते थे। गवां ने नियम बनाया कि प्रत्येक प्रांत का केवल एक दुर्ग तरफदार के अधीन रहेगा, शेष सभी दुर्ग सीधे सुल्तान द्वारा नियुक्त 'किलेदार' के अधीन होंगे।



4 भूमि नाप-जोख

पहली बार राज्य की कृषि भूमि की विस्तृत पैमाइश कराई गई और लगान का व्यवस्थित निर्धारण हुआ।



सांस्कृतिक योगदान

बीदर का मदरसा (1472 ई.)

- महमूद गवां ने बीदर में तीन मंजिला मदरसे का निर्माण करवाया, जिसमें 3,000 से अधिक दुर्लभ पांडुलिपियों का एक विशाल पुस्तकालय था।



साहित्यिक रचनाएं

- गवां स्वयं एक उत्कृष्ट लेखक और कवि था।
- उसके पत्रों का संकलन 'रियाज-उल-इश्शा' और उसका काव्य संग्रह 'दीवान-ए-अम्म' नाम से जाना जाता है।



गवां का पतन

- बहमनी दरबार दो परस्पर विरोधी गुटों में बंटा हुआ था -

दक्कनी
(स्थानीय मुस्लिम और धर्मांतरित भारतीय मुस्लिम)

अफाकी / परदेसी
(ईरान, तुर्की, अरब और मध्य एशिया से आए विदेशी मुस्लिम, जिनका गवां सदस्य था)

- दक्कनी गुट के प्रमुख निजाम-उल-मुल्क बहरी ने गवां के विरुद्ध षड्यंत्र रचा और उड़ीसा के राजा के साथ गुप्त पत्राचार का एक जाली पत्र तैयार कर सुल्तान मुहम्मद शाह तृतीय के सामने पेश किया।
- 5 अप्रैल 1481 ई. को नशे की हालत में सुल्तान ने गवां को मृत्युदंड दे दिया। गवां की मृत्यु के साथ ही बहमनी सल्तनत की प्रशासनिक रीढ़ टूट गई।



"गवां की मृत्यु बहमनी सल्तनत के पतन की शुरुआत थी!"